



विल्किंसन के लंदन में राज़ खोलता विराम

अगला दिन पूरी आज़ादी का था।

कोई मुलाक़ात नहीं।

कोई कार्यक्रम नहीं।

कोई ड्राइवर नहीं।

कोई रस्म नहीं।

मैं पिकाडिली सर्कस में घूमता रहा, और मेरी नज़र हर बार एक ही तरफ़ खिंच जाती थी।

सोहो।

जवानी में उन जगहों ने मुझे अपनाया था।

सिर्फ़ ग्राहक की तरह नहीं।

देखने वाले की तरह भी।

एक चहेता मेहमान।

खुलेआम चहेता।

बरस बीतने के साथ मैंने सीखा कि कमज़ोरियों को छिपाना नहीं चाहिए।

उन्हें समझना चाहिए।

और जब वे किसी का नुक़सान न करें, तो उन्हें उन चीज़ों से पाला-पोसा भी जा सकता है जो हमें सुख देती हैं।

मैं बिना किसी जल्दी के चलता रहा।

लंदन रोज़ से ज़्यादा शांत लग रहा था।

शायद शहर बदल गया था।

शायद मैं बदल गया था।

या शायद यह बस मैगी का असर था।

जब से मैं उनसे मिला था, हर सड़क कोई कहानी सुनाती लगती थी।

हर इमारत किसी याद की रखवाली करती दिखती थी।

शहर का हर कोना किसी ऐसे का लगता था जो अब वहाँ नहीं था।

पहली बार मैं लंदन घूम नहीं रहा था।

मैं उसे सुन रहा था।

और पिकाडिली सर्कस पार करते हुए, रोशनियों, सैलानियों और अपनी जवानी के पुराने भूतों के बीच, मैं जान गया कि यह आराम का दिन नहीं था।

यह बस एक सबक्र और अगले सबक्र के बीच का मध्यांतर था।

क्योंकि अगले दिन मैं अपनी मौसी से फिर मिलने वाला था।

और उनके साथ, बहुत मुमकिन है, उस कहानी के एक और टुकड़े से, जिसे अब तक किसी ने पूरा नहीं सुनाया था।

फर्दिनांदो